SHRI BALAJI INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCE
MEDICAL EDUCATION UNIT
PATIENT AWARENESS PROGRAMME

The awareness program was held, by **Department of Nephrology** on 01/02/2023 from 1:00pm to 4:00pm in MEU hall 4th floor college block

40 participants attended the program with the following intentions

1. Awareness regarding dialysis therapy
2. Awareness regarding renal transplant (live & Cadaver)
3. Awareness regarding vaccination in dialysis patient
4. Making understand government scheme
5. Answering the patient questions
6. How to survive, if don't have donor for renal transplant
7. Diet in dialysis patient

Dr Sainath Pattewar (Consultant Nephrologist)
Dr Suraj Jajoo (Consultant Urologist)
Dr Ravi Dhar (Consultant Nephrologist)

रायपुर, गुरुवार 02 फरवरी 2023
www.dailypioneer.com
पायनियर
छत्तीसगढ़ 02

श्रीबालाजी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस में आयोजित हुआ किडनी ट्रांसप्लांट अवेरनेस प्रोग्राम

मरीजों ने माना रोज-रोज डायलिसिस की पीड़ा से बचने किडनी ट्रांसप्लांट ही जीवन का बेहतर विकल्प, डाक्टरों ने किडनी ट्रांसप्लांट के लिए सरकारी सुविधा के बारे में विस्तार से बताया

पायनियर संवाददाता ◂ रायपुर
www.dailypioneer.com

मोवा स्थित श्रीबालाजी हॉस्पिटल के किडनी ट्रांसप्लांट विभाग के विशेषज्ञ डाक्टरों ने श्रीबालाजी हॉस्पिटल मेडिकल साइंस ऑफ मेडिकल साइंस में किडनी ट्रांसप्लाट अवेरनेस प्रोग्राम आयोजित किया गया। किडनी ट्रांसप्लांट प्रोग्राम में विशेषज्ञ डा. साईंनाथ पतेवार, डा. रविधर गुप्ता, डा. सूरज जाजू ने बारी-बारी से मरीजों की परेशानी को जाना और उसके समाधान किए। इस अवेरनेस प्रोग्राम में छत्तीसगढ़ सहित आसपास के राज्यों मध्यप्रदेश और उड़ीसा के मरीज बड़ी संख्या में किडनी ट्रांसप्लांट के मरीज और डायलिसिस के मरीज सम्मिलित हुए। जिसमें मरीज को डायलिसिस एवं गुर्दा प्रत्यारोपण के बारे में गहराई से जानकारी दी गई, और मरीजों को किडनी ट्रान्सप्लांट के बारे में जानकारी दी गई कि ट्रान्सप्लांट के बाद क्या-क्या सावधानियां बरतनी चाहिए इसके बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। किडनी रोग विशेषज्ञ डॉ. साईनाथ पतेवार ने ट्रांसप्लांट के बाद मरीज को बहुत सारी परहेज से छुटकारा मिल पाता है, और मरीज अपने जीवन को बेहतर ढंग से जीवन जी सकता है। डॉ. साईनाथ पतेवार ने बताया कि अगर मरीज के पास उसके परिवार से कोई भी सदस्य जिसका ब्लड ग्रुप मैच हो रहा है, वो अपने मरीज की किडनी दान कर उसका जीवन बचा सकता है। किडनी दानदाता की उम्र 60 वर्ष के कम होने पर आपरेशन के 99 प्रतिशत सफल होने के चांसेस बन सकते है। सर्जन डा. सूरज जाजू ने मरीजों के सवालों को जवाब देते हुए बताया कि आपरेशन के पहले किडनी ट्रांसप्लांट होने वाले मरीज और किडनी दानदाता की सूक्ष्मता से जांच की जाती है। वहीं दोनों का आपरेशन साथ-साथ चलता है। एक तरफ से किडनी निकाल कर तुरंत ट्रांसप्लांट किया जाता है। जिससे आपरेशन में किसी भी तरह की देरी न हो। इस प्रोग्राम में किडनी ट्रांसप्लांट के बाद डिस्चार्ज होकर दोबारा जांच के लिए कराने वाले मरीज भी आए थे, मरीजों ने बताया कि किडनी ट्रांसप्लांट के सबसे ज्यादा कष्टमय डायलिसिस से छुटकारा मिलने के साथ सामान्य खान-पान और सामान्य काम काज करने में कोई तकलीफ नहीं है। शुगर कंट्रोल तो दवाई से हो रहा है, वहीं बीपी भी सामान्य स्तर पर है।

डा. साईंनाथ ने बताया कि आठ साल पहले जिस मरीज का किडनी ट्रांसप्लांट किया गया था, मरीज की लापरवाही या यो कहे कि नियमित जांच नहीं कराने से किडनी फेल हो गया। अब उसका दूसरी बार ट्रांसप्लांट किया जाएगा। मरीज को पहले मां ने किडनी दान किया था,अब पिता किडनी दान कर बेटे की जान बचाएगा। ऐसे भी कई मरीज है जो जांच की गंभीरता को नहीं समझते और परेशानी झेलते है। उन्हें स्वस्थ होने के बाद भी डाक्टर के अनुसार महीने दो महीने, 6 महीने, साल में एक बार तो किडनी ट्रांसप्लांट की जांच कराने आना ही चाहिए। जिससे उम्र के साथ होने वाले बदलाव से किडनी की कार्यशीलता को बनाए रखने के लिए जरूरी इलाज किया जा सके। जागरूकता की कमी की वजह से अक्सर मरीज सामान्य ठीक-ठाक काम काज करने पर यह मान बैठता है कि वह पूरी तरह स्वस्थ है। लेकिन ऐसा नहीं है। ट्रांसप्लांट के बाद जांच एक प्रक्रिया है, नियमित जांच कराना बहुत ही जरूरी है। जो लोग लापरवाहीवश या समयाभाव का बहाना बनाकर टालते रहते है। जो उचित नहीं है। यदि जीवन भर स्वस्थ रहना है तो ट्रांसप्लांट के बाद जीवन में आदत में डाल ले कि जांच नियमित कराना है।

आपरेशन के लिए शुल्क दे रही सरकार

श्री बालाजी हॉस्पिटल में मध्यप्रदेश और उड़ीसा सरकार के हेल्थ कार्ड मान्य है। छत्तीसगढ़ में भी केंद्र सरकार की आयुष्मान कार्ड और राज्य सरकार की स्वास्थ्य कार्ड से पांच लाख तक की इलाज की सुविधा सरकार दे रही है। इस अवसर पर डॉ. साईनाथ पतेवार (सीनियर किडनी रोग विशेषज्ञ), डॉ. रविधर गुप्ता सीनियर गुर्दा रोग विशेषज्ञ, डॉ. सूरज जाजू सीनियर मूत्र रोग विशेषज्ञ, अजीत सिंह डायलिसिस मैनेजर, कृष्णकांत साहू किडनी ट्रांसप्लांट को-ऑर्डिनेटर आदि उपस्थित थे।

किडनी के लिए रजिस्ट्रेशन अवश्य कराए

डा. सूरज जाजू और डा. साईंनाथ ने किडनी के मरीजों को बताया कि दानदाता नही मिलने पर सरकार ने जो चार सेंटर बनाए है वहां रजिस्ट्रेशन कराने के सुझाव दिए है ताकि आपके ब्लड ग्रुप को मैच करने वाले किडनी मिलने में सुगमता हो। छत्तीसगढ़ में अभी रजिस्ट्रेशन की मारामारी नही है, वहीं महाराष्ट्र और साउथ के राज्यों में किडनी के रजिस्ट्रेशन सुविधा उपलब्ध होने के बाद भी उपलब्धता की मारामारी है।

The awareness program was held, by **Department of Nephrology** on 11/02/2023 from 1:00pm to 4:00pm in MEU hall 4th floor college block

30 participants attended the program with the following intentions

An awareness program has been organized for kidney dialysis patients by kidney disease specialist at Shri Balaji Institute of Medical Sciences, Mowa Raipur. In this program patients from Chhattisgarh, Odisha, and Madhya Pradesh took advantage by attending this program. In the Dialysis Awareness Program, kidney disease specialist Dr. Sainath Pattewar and Dr. RaviDhar Gupta, dialysis manager Ajeet Singh, gave detailed information about what precautions should be taken to avoid the problems faced by the patients. Dr. Sainath Sir told that if the patient takes dialysis and the medicine prescribed by the doctor on time, then the patient will not have any problem and the patient can do his daily routine work without any problem, the same Ajeet Singh told that dialysis is necessary for permanent kidney failure (CKD) as much as air is needed for breathing and told that there are natural kidney and artificial kidney which we know as (dialyzer). Giving more information, Ajeet Singh said that as opposed to natural kidney an artificial kidney work only 9 to 12 hours per week Dr. Sainath and Ravi Dhar sir told that the patient should take dialysis as prescribed by doctor so that they avoid any problem. They also highlighted that dialysis is being done in Balaji Hospital under Ayushman card and (BSKY) card and patients are not charged any kind of fees. Mr. Krishna Kant sahu who is working as Transplant coordinator has counseled the patient regarding the kidney transplant program.

रायपुर, रविवार 12 फरवरी 2023
www.dailypioneer.com

पायनियर

सोच बदलो, दुनिया बदलो, किडनी ट्रांसप्लांट का लाभ लो

श्री बालाजी हॉस्पिटल में मरीजों को जागरूक करने अवेरनेस कार्यक्रम का आयोजन

पायनियर संवाददाता ◀ रायपुर
www.dailypioneer.com

श्री बालाजी हॉस्पिटल में किडनी पीड़ितों को जागरूक करने के लिए अवेरनेस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें किडनी विभाग के विशेषज्ञ डा. सांईनाथ पतेवार, डा. रविधर डा. अजीत सिंह ने किडनी के मरीजों को डायलिसिस और किडनी ट्रांसप्लांट की जरूरतों पर प्रकाश डाला। इस शिविर में श्रीबालाजी हॉस्पिटल के सैकड़ों मरीजों को अच्छा सोचो सोच बदलकर दुनिया बदलने के लिए प्रेरित किया। किडनी खराब होने पर घबराने या डरने की जरूरत नहीं है आज चिकित्सा का क्षेत्र इतना उन्नतशील हो चुका है कि बार-बार डायलिसिस से बचने के लिए एक मात्र विकल्प है किडनी ट्रांसप्लांट जिसके लिए केंद्र सरकार आयुष्मान और राज्य सरकार खूबचंद स्वास्थ्य योजना के माध्यम से अनुदान दे रही है इसका लाभ मरीजों को उठाना चाहिए। डायलिसिस से किडनी में भरे अपशिष्ट वेस्ट प्रोडक्ट को बाहर निकाला जाता है। जो पेशाब के जरिए बाहर निकाल जाता है। डा. साईनाथ पतेवार ने बताया कि किडनी खराब होने पर पेशाब बाधित होने के साथ की अन्य बीमारी भी शरीर में जगह बनाने लगती है, जैसे भूख न लगना, कमजोरी महसूस करना, सांस फूलना, बुखार आना आदि सामान्य लक्षण है। किडनी मरीजों को नियमित बीपी शुगर की जांच कराना चाहिए जिससे उन्हें पता रहे कि हमारे शरीर में शुगर और बीपी कंट्रोल में है। डायलिसिस कराने वालों को डाक्टरों के बताए अनुसार दवाई लेना अनिवार्य है। डा. अजीत ने वीडियो के माध्यम से बताया कि किडनी दो तरह की होती है एक प्राकृतिक और दूसरा कृत्रिम। दोनों किडनी में जो प्राकृतिक होता है वह शरीर में सौ प्रतिशत काम करता है अपशिष्ट पदार्थों का बाहर करता है जबकि कृत्रिम किडनी सप्ताह में 12 घंटे ही काम करता है। शिविर में आए मरीजों ने डायलिसिस और किडनी ट्रांसप्लाट के पहले और बाद के अनुभव साझा किए। डा. रविधर ने बताया कि मरीज सीधे अपनी बात डाक्टर से कह सकता है। मरीजों की परेशानी का समाधान करना ही डाक्टरों का मूल कर्तव्य है। डा. रविधर ने कहा कि सभी डाक्टर चाहते है कि मरीज को जल्द से जल्द लाभ मिले लेकिन किडनी ट्रांसप्लाट की प्रक्रिया थोड़ी जटिल है, इसमें डोनर और जिस मरीज में ट्रांसप्लांट होना है उन्हें गहन जांच प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। परीक्षण के बाद डाक्टर जब संतुष्ट हो जाता है तभी ट्रांसप्लाट के लिए आगे कदम बढ़ाता है। किडनी ट्रांसप्लांट 95 प्रतिशत सफल होता है, 5 प्रतिशत मरीजों के व्हील पावर पर निर्भर करता है वह कैसा रियेक्ट करता है। मरीजों को चाहिए कि डायलिसिस कराते रहने से भी जीवन आसानी चलती रहती है। यदि डायलिसिस की प्रक्रिया से सप्ताह में 3 बार कराने आने से बचना चाहते है तो उसका बेहतर विकल्प है किडनी ट्रांसप्लाट है। श्री बालाजी इन्सीटिट्यूट ऑफमेडिकल साइंस में किडनी डायलिसिस मरीजो के लिए अवेरनेस प्रोग्राम आयोजीत किया गया। मोवा स्थित श्रीबालाजी अस्पताल के किडनी रोग विशेषज्ञ ने श्री बालाजी अस्पताल मेडिकल साइंस में डायलिसिस मरीजों के लिए अवेरनेस प्रोग्राम में छत्तीसगढ़, उड़ीसा, मध्यप्रदेश के मरीजों ने इस प्रोग्राम का लाभ लिया। डायलिसिस अवेरनेस प्रोग्राम में किडनी रोग विशेषज्ञ डॉ.साईनाथ पतेवार और डा.रविधर गुप्ता, डायलिसिस मैनेजर डॉ.अजीत सिंह ने बारी-बारी से मरीजों को होने वाली परेशानियों से बचने के लिए क्या-क्या सावधानी बरतनी चाहिए इसके बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ.साईनाथ ने बताया कि मरीज को डायलिसिस और डॉक्टर द्वारा बताई गई दवाई मरीज समय से लेता है तो मरीज को तकलीफनही के बराबर होगी और मरीज अपने डेली रूटीन काम को बिना परेशानियों के अच्छे से अपने काम को कर सकते है। वही डायलिसिस मैनेजर डॉ.अजीत सिंह ने बताया सांस लेने के लिए जितनी जरूरी हवा है उतना ही परमानेन्ट किडनी फैलीयर के डायलिसिस जरूरी है और बताया कि नेचुरल किडनी और कृतिम किडनी जिसको हम (डाईलाईजर) के नाम से जानते है। डॉ.अजीत सिंह ने और भी जानकारी देते हुए बताया कि प्राकृतिक किडनी और कृतिम किडनी में क्या अंतर है। प्राकृतिक किडनी 24 घंटे कार्य कर 100 परसेंट सहयोग करते है वही कृतिम गुर्दे प्रति सप्ताह मात्र 9 से 12 घंटे कार्य कर 8 से 10 परसेंट बेहतर सहयोग करता है। प्राकृतिक गुर्दे सभी प्रकार के अपशिष्ट पदार्थों को निकालने में सक्षम जबकि कृत्रिम गुर्दे में ऐसा नही है कुछ ही अपशिष्ट पदार्थ को निकालता है। डॉ.साईनाथ एवं डॉ.रविधर ने बताया कि जिस मरीज को सप्ताह में जितनी बार डायलिसिस के लिए बोला गया है उन सभी मरीजों को उतने बार डायलिसिस लेना चाहिए और परेशानी से बचना चाहिए। और आगे जानकारी देते हुए बताया कि बालाजी हॉस्पिटल में आयुष्मान कार्ड और बी.एस.के.वाय कार्ड के तहत् डायलिसिस किया जा रहा है और मरीज से किसी भी प्रकार का कोई भी शुल्क नहीं लिया जाता। इस अवसर पर डॉ.साईनाथ पतेवार सीनियर किडनी रोग विशेषज्ञ और डा.रविधर गुप्ता किडनी रोग विशेषज्ञ, डॉ.अजित सिंह सीनियर डायलिसिस मैनेजर, कृष्णकांत साहू ट्रॉन्सफलान्ट कोडीनेटर आदि उपस्थित थे।

प्राकृतिक गुर्दे एवं कृत्रिम गुर्दे में अंतर

प्राकृतिक गुर्दे	कृत्रिम गुर्दे
ये २४ घंटे कार्य कर १०० % सहयोग प्रदान करते हैं।	प्राकृतिक गुर्दे की अपेक्षा प्रति सप्ताह मात्र ९ से १२ घंटों का हेमोडियालिसिस ८ से १० % कार्य करके बेहतर सहयोग करता है।
ये सभी प्रकार के अपशिष्ट पदार्थ और विभिन्न आकार के मोलेकुल्स को निकालते हैं।	उच्च प्रवाह होने पर भी मध्यम आकार के मोलेकुल्स को निकालना संभव नहीं है।
प्राकृतिक गुर्दे प्रवाह को नियंत्रित एवं नमक एसिड क्षार एवं रक्तचाप को नियंत्रित बनाये रखते हैं।	कृत्रिम गुर्दे डायलिसिस एवं दवाओं से नमक एसिड एवं रक्तचाप को नियंत्रित करते हैं।
प्राकृतिक गुर्दे से E.PO, हार्मोन और विटामिन D 3 अपने आप बनते रहते हैं।	कृत्रिम गुर्दे से E.PO, हार्मोन और विटामिन D 3 अपने आप नहीं बनते पर डायलिसिस के दौरान उनके सप्लीमेंट्स दिए जाते हैं।

MEDICAL EDUCATION UNIT
SBIMS RAIPUR